नवोन्मेष
रुक्टा (राष्ट्रीय)

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
(अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ से संबद्ध)

website: www.ructarashtriya.org **Email:** info@ructarashtriya.org

केन्द्रीय कार्यालय	:	देराश्री शिक्षक सदन, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर-302004
प्रधान कार्यालय	:	राजकीय महाविद्यालय, अजमेर-305 001 (राज.)
अध्यक्ष	:	डॉ. मधुर मोहन रंगा, अजमेर (0145) 2429341, मो. 9414008425
महामंत्री	:	डॉ. नारायणलाल गुप्ता, अजमेर मो. 9414497042

परिपत्र क्रं. : रुक्टा (रा.)/2013-14/03 फाल्गुन कृष्ण ९ वि. स. २०७० तदनुसार 24 फरवरी , 2014
(सभी इकाई सचिवों एवं सक्रिय सदस्यों को समस्त सदस्यों में प्रसारित करने के अनुरोध सहित प्रेषित)

प्रिय महोदय/महोदया,

सादर नमस्कार।

पिछले परिपत्र के पश्चात् राजकीय महाविद्यालय, अजमेर में सम्पन्न 52वें प्रांतीय अधिवेशन के विवरण, महामंत्री प्रतिवेदन, अंकेक्षित आय-व्यय लेखा, साधारण सभा द्वारा पारित प्रस्ताव, मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री, अतिरिक्त मुख्य सचिव (शिक्षा) से भेंट के विवरण व अन्य सूचनाओं सहित यह परिपत्र आपके समक्ष प्रस्तुत है -

52वें प्रान्तीय अधिवेशन का विवरण

संगठन का 52वाँ प्रांतीय अधिवेशन 15 व 16 जनवरी 2014 को राजकीय महाविद्यालय अजमेर में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में राज्य के सभी जिलों से राजकीय महाविद्यालयों एवं छः विश्वविद्यालयों के तीन हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने उत्साह से भाग लिया। अधिवेशन के संभागियों में महाविद्यालयों के व्याख्याता, शारीरिक शिक्षक, पुस्तकालाध्यक्ष, निदेशालय के सहायक एवं संयुक्त निदेशक, विश्वविद्यालयों के आचार्यों सहित अनेक सेवानिवृत्त शिक्षक शामिल थे। अधिवेशन में शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल, महामंत्री प्रो. जगदीश प्रसादजी सिंघल, संगठन मंत्री श्री महेन्द्रजी कपूर, शैक्षिक मंथन पत्रिका के प्रधान संपादक प्रो. संतोषजी पाण्डेय, रुक्टा (राष्ट्रीय) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचन्दजी, अजमेर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पुरुषोत्तमलालजी चतुर्वेदी की अधिवेशन की सम्पूर्ण कालावधि में उपस्थिति विशेष रूप से प्रेरणादायी रही।

1. **अधिवेशन का उद्घाटन शिक्षा मंत्री मा. कालीचरण जी सराफ द्वारा** - 52वें प्रांतीय अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान सरकार के शिक्षा मंत्री माननीय कालीचरण जी सराफ ने माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्पण कर किया। उद्घाटन सत्र् की अध्यक्षता अजमेर उत्तर विधायक एवं पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री प्रो. वासुदेवजी देवनानी ने की। विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल थे। सत्र् का प्रारंभ सामूहिक सरस्वती वंदना से हुआ। आयोजन अध्यक्ष एवं रुक्टा (राष्ट्रीय) के अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए संगठन के वैचारिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया। उन्होंने शिक्षा नियामक आयोग के गठन की मांग करते हुए शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का न्यूनतम पन्द्रह प्रतिशत व्यय करने की आवश्यकता जताई। उद्घाटन कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. विमल प्रसाद जी अग्रवाल ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के ध्येय वाक्य को रेखांकित करते हुए राष्ट्रीय चिन्तन को केन्द्र में रख कर शिक्षक तैयार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। संगठन महामंत्री ने पदनाम परिवर्तन,

आर.वी.आर.ई. एस. शिक्षकों को बकाया यू.जी.सी. एरियर, मेडिकल, पी. एल., ग्रेच्युटी आदि का लाभ देने, पीएच.डी., एम.फिल एवं पूर्व सेवा का लाभ सभी पात्र शिक्षकों को देने, सीनीयर व सलेक्शन स्केल हेतु संवीक्षा करने, परीक्षा पारिश्रमिक में वृद्धि करने, निदेशक पद पर शिक्षक की नियुक्ति करने सहित अन्य लंबित समस्याओं के समाधान की मांग की।

मुख्य अतिथि श्री कालीचरण जी सराफ ने पदनाम परिवर्तन, पूर्व सेवा का लाभ, कॅरियर एडवांसमेन्ट योजना, शिक्षा नियामक आयोग की स्थापना, पीएच.डी. हेतु कोर्सवर्क करने के लिए अध्ययन अवकाश की व्यवस्था, परीक्षा पारिश्रमिक वृद्धि, रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ करने सहित अन्य समस्याओं पर सरकार का पक्ष रखते हुए शीघ्र समाधान का विश्वास दिलाया। उन्होंने आश्वस्त किया कि पदनाम परिवर्तन में आ रही वित्तीय एवं प्रशासनिक बाधाओं को दूर किया जाएगा। उन्होंने शिक्षकों को भरोसा दिलाया कि राज्य में उनकी समस्याओं के समाधान के लिए अब उन्हें सड़कों पर नहीं उतरना पड़ेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. वासुदेवजी देवनानी ने कहा कि शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाने में सरकार, शिक्षकों एवं प्रशासनिक अधिकारियों के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार शिक्षकों एवं शिक्षा के हित में कार्य करने के लिए संकल्पबद्ध है। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा इस वर्ष प्रबोधनात्मक जनजागरण हेतु तय किये गए विषय शाश्वत जीवन मूल्य पर रुक्टा (राष्ट्रीय) द्वारा प्रकाशित स्मारिका **नाऽऽन्यः पंथाः** का विमोचन भी उद्घाटन सत्र् में अतिथियों द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र् में रा. स्व. संघ के क्षेत्र संघचालक माननीय प्रो. पुरुषोत्तमजी पराजंपे, क्षेत्र कार्यवाह माननीय श्री हनुमानसिंहजी, अजमेर दक्षिण विधायक श्रीमती अनिताजी भदेल, पूर्व सांसद श्री रासासिंहजी रावत, बीकानेर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. सी.बी. गेना, भगवंत विश्वविद्यालय के कुलपति एवं जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. लोकेशजी शेखावत भी उपस्थित थे। आयोजन सचिव डॉ. सुशील कुमार बिस्सु ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रेखा यादव ने किया।

2. **देराश्री स्मृति व्याख्यान** – 52वें प्रांतीय अधिवेशन के अवसर पर देराश्री स्मृति व्याख्यान में मुख्य वक्तव्य मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ. ए. के. पाण्डेयजी ने दिया। उन्होंने कहा कि हमने भौतिक समृद्धि प्राप्त की है, शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रगति की है किन्तु हम सामाजिक दायित्वों पर खरे नहीं उतरे हैं, हमें शिक्षा प्रक्रिया में बदलाव कर सामाजिक शुचिता के लिए कार्य करना होगा। आज देश में विश्वास का संकट है, हर व्यक्ति संदेह के घेरे में है, अतः जब तक हम नैतिक दृढ़ता से आचरण नहीं करेंगे, दूसरों की अपेक्षा पर खरे नहीं उतर सकते। शिक्षा में सुधार लाने के लिए मानवीय गुणों का समावेश होना आवश्यक है। व्याख्यानमाला की अध्यक्षता करते हुए विराटनगर विधायक डॉ. फूलचन्दजी भिण्डा ने कहा कि शिक्षा में सदाचार एवं संस्कार होना चाहिए, जो केवल पुस्तकों से नहीं आ सकते हैं। राष्ट्र भक्ति के बिना कोई देश जागृत नहीं हो सकता है, यह राष्ट्रधर्म केवल शिक्षक ही सिखा सकता है। अपने पर विश्वास, समाज पर विश्वास तथा राष्ट्र पर विश्वास व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण तथा राष्ट्र निर्माण में महती भूमिका निभाता है। इससे पूर्व मंचासीन अतिथियों ने देराश्रीजी के चित्र पर माल्यार्पण किया तथा संगठन अध्यक्ष ने देराश्रीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया। संगठन महामंत्री ने आभार प्रदर्शित करते हुए कहा कि प्रो. सत्यदेव देराश्री संगठन के प्रेरणा स्रोत रहे हैं तथा उनकी स्मृति में संगठन प्रतिवर्ष इसी प्रकार समाज के श्रेष्ठ व्यक्तियों के व्याख्यान आयोजित करवाने के लिए संकल्पबद्ध हैं। इस कार्यक्रम को और अधिक भव्य बनाने के लिए स्वैच्छिक सहायता का संगठन स्वागत करता है, किन्तु यदि ऐसी सहायता संगठन की कार्यपद्धति के विपरीत शर्तों के साथ दी जाए तो विनम्रता से संगठन उन्हें अस्वीकार करता है।

3. **समूहशः बैठकें सम्पन्न** – 15 जनवरी को सायंकाल समूहशः बैठकें सम्पन्न हुई जिसमें राजकीय, विश्वविद्यालय एवं निजी क्षेत्र के शिक्षकों द्वारा अलग-अलग समूहों में अपने क्षेत्र से संबंधित समस्याओं पर विचार मंथन किया गया। बैठक में प्रतिनिधियों ने संगठन की विभिन्न इकाईयों द्वारा पारित प्रस्तावों को प्रस्तुत किया। प्रस्तावों में राज्य एवं केन्द्र स्तर पर लंबित समस्याओं के अलावा विश्वविद्यालयों एवं स्थानीय स्तर की समस्याएं शामिल थी। इन बैठकों की अध्यक्षता संबंधित क्षेत्र के उपाध्यक्ष एवं संचालन संयुक्त सचिव ने किया।

4. **शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति** - समूहश: बैठकों के उपरान्त अधिवेशन के प्रथम दिन रात्रि कार्यक्रम में स्थानीय महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने नृत्य, गायन एवं वादन के माध्यम से भावपूर्ण सांस्कृतिक रचनाएं प्रस्तुत की, जिसे उपस्थित संभागियों ने जमकर सराहा। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सोमकांत भोजक एवं डॉ. एन. एम. मदनी थे।

5. **''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अकादमिक पाठ्यक्रमों की उपादेयता'' विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न** - 16 जनवरी अधिवेशन के द्वितीय दिन का प्रारंभ ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अकादमिक पाठ्यक्रमों की उपादेयता'' विषय पर शैक्षिक संगोष्ठी से हुआ। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. राजेन्द्र शर्मा ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि अकादमिक पाठ्यक्रम व्यक्ति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं एवं शिक्षा का उद्देश्य मात्र रोजगार सृजन करना नहीं है। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के महामंत्री प्रो. जगदीश प्रसादजी सिंघल ने कहा कि शिक्षा जीवन का मूलाधार है, यह मनुष्य का तीसरा नेत्र है जिससे मनुष्य का जीवन आलोकित होता है तथा बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन होता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन नहीं अपितु प्रज्ञाशील समाज की स्थापना करना है। उन्होंने कहा कि अकादमिक पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता पर ध्यान देकर उनमें सुधार की आवश्यकता है ताकि शिक्षण प्रणाली सूचना सम्प्रेषण का माध्यम न रह कर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में तथा स्वस्थ समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दे। अध्यक्षीय उदबोधन देते हुए राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. परमेन्द्रजी दशोरा ने कहा कि आज का युवा अकादमिक पाठ्यक्रमों के उपरान्त भी बेरोजगार रहता है, यह समाज का एक दृष्टिकोण हो सकता है, परन्तु वास्तविकता यह है कि तकनीकी शिक्षा व्यवसायीकरण की ओर ले जाती है जबकि अकादमिक शिक्षा मानवीकरण की ओर ले जाती है। अकादमिक पाठ्यक्रम की उपादेयता हमेशा रही है और आगे भी रहेगी क्योंकि देश का भविष्य मानव मूल्यों पर आधारित है, न कि वस्तुओं पर। इससे पूर्व डॉ. दिलीप गोयल, डॉ. गीताराम शर्मा, डॉ. के. बी. भारतीय, डॉ. डी.सी. चौबे, डॉ. श्योराजसिंह परमार, डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह, डॉ. हरिसिंह राजपुरोहित, प्रो. अनिल गुप्ता, प्रो. कैलाश सोडानी, डॉ. बिहारी लाल मीणा, डॉ. नरेश अग्रवाल आदि शिक्षकों ने अपने शोध पत्र एवं विचार प्रस्तुत किये।

6. **सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान** - पिछले दो अधिवेशनों से सेवानिवृत्त शिक्षकों के सम्मान की परम्परा को 52वें अधिवेशन में लगातार निभाते हुए संगठन द्वारा अजमेर में निवास कर रहे विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से सेवानिवृत्त 103 शिक्षाविदों को शॉल ओढ़ाकर, अभिनंदन पत्र भेंट कर तथा श्रीफल देकर सम्मानित किया। संगठन की इस पहल पर सभी सेवानिवृत्त शिक्षाविद् अभिभूत हुए तथा संगठन के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने अमूल्य सुझाव दिये। शिक्षकों का सम्मान अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल, महासंघ के महामंत्री प्रो. जे. पी. सिंघलजी, राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. परमेन्द्रजी दशोरा एवं शैक्षिक मंथन पत्रिका के प्रधान सम्पादक प्रो. संतोषजी पाण्डेय ने किया।

7. **खुला सत्र् एवं साधारण सभा** - 16 जनवरी को 52वें प्रांतीय अधिवेशन का खुला सत्र् एवं वार्षिक साधारण सभा सम्पन्न हुई। इस सत्र् में महामंत्री ने गत अधिवेशन के पश्चात् की गतिविधियों का विवरण देते हुए वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसे सदन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। कोषाध्यक्ष डा. अखिलेश्वर शर्मा ने 1 जुलाई 2012 से 31 मार्च 2013 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के अंकेक्षित आय-व्यय विवरण तथा बैलेंस शीट को सदन के पटल पर रखा, जिसे सदन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। उल्लेखनीय है कि कार्यकारिणी के निर्णयानुसार अब वार्षिक आय-व्यय विवरण अकादमिक सत्र् के स्थान पर वित्तीय वर्षानुसार ही प्रस्तुत किया जाएगा। महामंत्री प्रतिवेदन एवं आय-व्यय लेखा परिपत्र् के साथ संलग्न है। कार्यकारिणी एवं समूहश: बैठकों में हुए विचार विमर्श व शिक्षक प्रतिनिधियों द्वारा व्यक्त विचारों के आधार पर साधारण सभा ने सरकार को भेजे जाने वाले प्रस्ताव स्वीकार किये। इनमें पूर्व में पारित प्रस्तावों की पुन: पुष्टि करते हुए दो नवीन प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये - 1. उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, विस्तार एवं प्रभावी प्रबन्धन के लिए राज्य उच्च शिक्षा परिषद् का गठन अविलम्ब हो। 2. राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों के नैक से प्रत्यायन कराने के लिए

समुचित संसाधन एवं सुविधाएं विकसित की जाए। साधारण सभा ने अंत में शोक प्रस्ताव पारित करते हुए परमतत्व में लीन संगठन के संस्थापक सदस्य प्रो. हरकचंदजी रारा एवं गत अधिवेशन के पश्चात् दिवगंत शिक्षक साथियों को मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनकी आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की।

8. **समारोप कार्यक्रम** - संगठन के 52वें अधिवेशन का समारोप कार्यक्रम रा. स्व. संघ के अखिल भारतीय सहसेवा प्रमुख मा. गुणवंतसिंहजी कोठारी के मुख्य आतिथ्य एवं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री मा. महेन्द्रजी कपूर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मा. गुणवंतसिंहजी ने उपस्थित शिक्षक समुदाय से विवेकानंद के सुझाए गए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हम मानव को स्वीकारें तथा जात-पात, क्षेत्र, पंथ को नकारें तभी भारत का नवनिर्माण हो सकता है। वर्तमान सदी का नेतृत्व भारतीय युवाओं को करना है, यह नेतृत्व दरिद्र, किसान, खेत खलिहान से आए ऐसा विचार शिक्षाविदों को करना चाहिए। उन्होंने प्रतिभा पलायन पर पीड़ा जाहिर करते हुए कहा कि एक डॉक्टर तथा इंजीनियर बनाने के लिए सरकार द्वारा जनता से लिए जा रहे विभिन्न करों का अधिकांश भाग खर्च होता है, ऐसी स्थिति में उसका भारत छोड़ कर चला जाना राष्ट्र एवं समाज के लिए पीड़ाजनक है। उनका कहना था कि हृदय में धनीभूत वेदना के बिना सम्यक दिशा में समाज का कोई कार्य संपन्न नहीं हो सकता। अध्यक्षीय उद्‌बोधन करते हुए मा. महेन्द्रजी कपूर ने कहा कि हमें शाश्वत जीवन मूल्यों के विषय को लेकर आगे चलना है। कर्तव्य का बोध रखते हुए वर्ष पर्यन्त शिक्षा के उन्नयन में योगदान करना है। उन्होंने कहा कि सुझाव देने वाले व्यक्ति को दूसरे के सुझाव सुनने की सामर्थ्य भी होनी चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे चुनौतियों को स्वीकारें, सकारात्मक ढंग से आगे बढ़ें, राष्ट्रीय विचार को केन्द्र में रख कर समाज की अपेक्षाओं पर खरे उतरें। समारोप कार्यक्रम का संचालन डॉ. सोमकांत भोजक ने किया। संगठन की ओर से संगठन अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा एवं आयोजन इकाई की ओर से आयोजन सचिव डॉ. सुशील कुमार बिस्सु ने आभार प्रदर्शित किया।

9. **अधिवेशन हेतु अकादमिक अवकाश के आदेश** - रुक्टा (राष्ट्रीय) के 52वें प्रांतीय अधिवेशन में भाग लेने के लिए निदेशालय ने आदेश क्रमांक एफ. (17)रुक्टा राष्ट्रीय/अकाद/निकाशि/11 दिनांक 6 जनवरी 2014 के तहत अकादमिक अवकाश के आदेश जारी किये हैं।

10. **शुभकामना संदेश** - 52वें प्रांतीय अधिवेशन की सफलता एवं इस अवसर पर प्रकाशन स्मारिका ''नाऽऽन्यः पंथाः'' हेतु मा. मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे जी सिंधिया, मा. ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री गुलाबचन्दजी कटारिया, मा. शिक्षा मंत्री कालीचरणजी सराफ, मा. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्रसिंह जी राठौड़, राज्य सभा सदस्य भूपेन्द्रजी यादव, मा. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री अरुणजी चतुर्वेदी, विधायक अजमेर उत्तर एवं पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. वासुदेव जी देवनानी, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संरक्षक प्रो. के. नरहरिजी, महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल, महासंघ के महामंत्री प्रो. जे. पी. सिंघलजी, प्रमुख शासन सचिव (उच्च शिक्षा) राजीव स्वरूपजी, निदेशक कॉलेज शिक्षा नवीनजी जैन, कुलपति कोटा विश्वविद्यालय प्रो. मधुसुदनजी शर्मा, कुलपति मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर प्रो. इन्द्रवर्धन त्रिवेदीजी के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए। संगठन सभी का हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

शिक्षक समस्याओं से संबंधित एवं अन्य गतिविधियाँ

1. **मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजेजी से भेंट** - रुक्टा (राष्ट्रीय) के एक प्रतिनिधि मंडल ने 22 जनवरी को मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे जी से भेंट की। प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री को अभूतपूर्व विजय के साथ पदभार ग्रहण पर बधाई देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की। प्रतिनिधि मंडल ने इस अवसर पर प्रदेश में शिक्षा एवं शिक्षकों की विभिन्न लंबित समस्याओं से संबंधित विभिन्न तथ्यों को मुख्यमंत्रीजी के समक्ष विस्तार से रखा। वार्ता के विषयों में पदनाम परिवर्तन करने, पूर्व सेवा का लाभ सभी पात्र शिक्षकों को देने, सीनियर व सलेक्शन स्केल हेतु संवीक्षा करने, आर.वी.आर.ई.एस. व्याख्याताओं के बकाया यू.जी.सी. एरियर, पी.एल., मेडिकल आदि समस्याओं का समाधान करने, रिक्त पदों पर नियुक्ति करने, परिवीक्षाधीन शिक्षकों को नियुक्ति तिथि से सभी परिलाभ देने सहित अन्य लंबित समस्याएं शामिल थी। मुख्यमंत्री जी ने ध्यानपूर्वक सभी विषयों को सुना तथा

प्रतिनिधि मंडल को बताया कि वे स्वयं रुचि लेकर इन विषयों को देखेंगी तथा शीघ्र ही व्यापक हित में निर्णय लेंगी। प्रतिनिधि मंडल में शैक्षिक महासंघ के महामंत्री प्रो. जे. पी. सिंघल, संगठन अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा, महामंत्री, संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट व संभाग संगठन मंत्री डॉ. नन्दसिंह नरुका शामिल थे।

2. **शिक्षा मंत्री श्री कालीचरणजी सराफ से भेंट** - रुक्टा (राष्ट्रीय) के प्रतिनिधि मंडल ने 22 जनवरी को ही शिक्षा मंत्री श्री कालीचरणजी सराफ से 52वें प्रांतीय अधिवेशन में विभिन्न इकाइयों से आए शिक्षक समस्याओं संबंधी प्रस्तावों को लेकर भेंट की। प्रतिनिधि मंडल ने शिक्षा मंत्री जी के समक्ष शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं से संबंधित तथ्य एवं दस्तावेज प्रस्तुत किये तथा इनके समाधान में पहल करने की मांग की। शिक्षा मंत्रीजी ने प्रतिनिधि मंडल को बताया कि पदनाम परिवर्तन, पूर्व सेवा के लाभ, पारिश्रमिक वृद्धि, सीनियर व सलेक्शन स्केल की संवीक्षा सहित अन्य समस्याओं पर आ रही प्रशासनिक बाधाओं को दूर करने पर कार्य चल रहा है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि निकट भविष्य में कतिपय सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे।

3. **अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री श्याम एस. अग्रवालजी से भेंट** - अतिरिक्त मुख्य सचिव (शिक्षा) श्री श्याम एस. अग्रवाल से संगठन के प्रतिनिधि मंडल ने शासन सचिवालय में 22 जनवरी को भेंट की। प्रतिनिधि मंडल ने श्री अग्रवाल को अतिरिक्त मुख्य सचिव का पदभार ग्रहण करने पर शुभकामनाएं देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की। प्रतिनिधि मंडल ने श्री अग्रवाल को बताया कि पदनाम परिवर्तन नहीं होने, सीनीयर व सलेक्शन स्केल हेतु संवीक्षा नहीं करने, पीएच.डी., एम.फिल का लाभ नहीं देने से शिक्षक न्यायोचित अधिकार से वंचित है तथा राज्य की उच्च शिक्षा पिछड़ रही है। इन समस्याओं सहित आर.वी.आर.ई.एस. केडर की समस्याओं, परिवीक्षाधीन शिक्षकों एवं संविदा शिक्षकों की समस्याओं के सकारात्मक समाधान की मांग भी प्रतिनिधि मंडल ने श्री अग्रवाल से की। श्री अग्रवाल ने इन समस्याओं के संबंध में शीघ्र अधिकारियों के साथ बैठक कर वस्तुस्थिति जानने का मंतव्य प्रकट किया तथा निकट भविष्य में इस संबंध में उचित कार्यवाही हेतु आश्वस्त किया।

4. **शिष्टाचार भेंट** - संगठन के एक प्रतिनिधि मंडल ने 23 दिसम्बर को शिक्षा मंत्री श्री कालीचरणजी सराफ, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री राजेन्द्रसिंहजी राठौड़ तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री अरुणजी चतुर्वेदी से विधानसभा चुनाव में विजयी होकर राज्य मंत्रीमंडल में मंत्री पद संभालने पर बधाई दी तथा सफल कार्यकाल की कामना की। सभी मंत्रीगणों ने संगठन का आभार व्यक्त करते हुए व्यापक समाजहित में कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। प्रतिनिधि मंडल में संगठन अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा, महामंत्री, संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट तथा संभाग संगठन मंत्री डॉ. नंदसिंह नरुका शामिल थे।

5. **मुख्यमंत्रीजी एवं शिक्षामंत्रीजी को ज्ञापन प्रस्तुत** - रुक्टा (राष्ट्रीय) की भरतपुर इकाइयों के प्रतिनिधि मंडल ने राज्य सरकार के भरतपुर संभाग प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजेजी एवं शिक्षामंत्री श्री कालीचरणजी सराफ से भेंट की तथा शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रतिनिधि मंडल ने ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया से भी भेंट कर शिक्षकों का पक्ष रखा तथा उनसे सहयोग की अपेक्षा की। प्रतिनिधि मंडल में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य डॉ. सतीश त्रिगुणायत, विभागीय समिति अध्यक्ष प्रो. जग्गो सिंह, प्रचार प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. मानवेन्द्र चतुर्वेदी, इकाई सचिव डॉ. अनिल सक्सेना एवं डॉ. सुनील गुप्ता, डॉ. बी. के. गुप्ता, डॉ. गोविन्द चरोरा, डॉ. योगेन्द्र भानु, डॉ. के. के. गुप्ता आदि शामिल थे।

6. **श्री समीरसिंह चंदेल के आयुक्त पदभार ग्रहण करने पर शुभकामनाएं** - कॉलेज शिक्षा राजस्थान के आयुक्त पद पर श्री समीरसिंह चंदेल द्वारा पदभार ग्रहण करने पर संगठन ने उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित की हैं तथा अपेक्षा की है कि उनके कार्यकाल में राज्य की उच्च शिक्षा एवं शिक्षकों के हित में उचित निर्णय लेकर सकारात्मक माहौल का निर्माण होगा।

7. **उपाचार्यों के नियुक्ति आदेश जारी** - राज्य सरकार के आदेश क्रमांक एफ 3(1) शिक्षा/ग्रुप-3/2014 दिनांक 15-1-2014 द्वारा राजस्थान शिक्षा सेवा (महाविद्यालय शाखा) के उपाचार्यों एवं कार्यवाहक प्राचार्यों के

पदस्थापन आदेश जारी किये। उल्लेखनीय है कि अप्रेल 2013 में पात्र प्राध्यापकों को उपाचार्य पद पर पदोन्नति आदेश जारी करने के बाद से ही संगठन ने लगातार पदोन्नत उपाचार्यों के पदस्थापन की मांग कर सरकार पर दबाव बनाया था।

8. **विधि महाविद्यालयों को स्वतंत्र दर्जा देने की ओर कदम** - संगठन की मांग पर आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान ने आदेश क्रमांक प. 4 (126)आयो/निकाशि/विधि/2013/2112 दिनांक 13-2-2014 के द्वारा विधि महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों के पद मूल पैतृक महाविद्यालयों से विधि महाविद्यालयों को स्थानान्तरित कर प्राचार्यों को वित्तिय अधिकार प्रदान किये हैं। इससे विधि महाविद्यालयों का न केवल विकास होगा बल्कि बार कॉसिल ऑफ इण्डिया द्वारा इन महाविद्यालयों को स्थायी मान्यता प्राप्त करने में आ रही बाधाएं भी दूर होंगी। उल्लेखनीय है कि संगठन लगातार विधि महाविद्यालयों को पूर्ण स्वतंत्र अधिकार सम्पन्न महाविद्यालय बनाने की लगातार मांग करता रहा है।

9. **शीतकालीन अवकाश में परिवर्तन संबंधी कार्यवाही की सूचना प्राप्त** - प्रवेश नीति में पूर्व घोषित शीतकालीन अवकाश में निदेशालय द्वारा परिवर्तन करने पर संगठन ने राज्यपाल एवं मुख्य निर्वाचन अधिकारी को आदर्श आचार संहिता के चलते हुए भी नीतिगत निर्णय लेने सहित अन्य तथ्य प्रस्तुत करते हुए आदेश को निरस्त करने की मांग की थी। संगठन के ठोस एवं प्रमाणिक विरोध के चलते यह आदेश निरस्त कर दिया गया था। इस विषय में मुख्य निर्वाचन अधिकारी राजस्थान एवं राज्यपाल महोदया ने संगठन के पत्रों का संदर्भ देते हुए निदेशालय को तुरन्त सकारात्मक कार्यवाही करने के निर्देश दिये थे। इस संदर्भ में निदेशालय ने पत्र क्रमांक एफ 7 (4) रुक्टा राष्ट्रीय अकाद/निकाशि/233 दिनांक 3-12-2013 एवं एफ. 7 (4) रुक्टा राष्ट्रीय अकाद/निकाशि/236 दिनांक 12-12-2013 द्वारा मुख्य निर्वाचन अधिकारी एवं राज्यपाल महोदय को रुक्टा (राष्ट्रीय) के पत्र क्रमांक 34128 दिनांक 14-11-2013 एवं 34132 दिनांक 16-11-2013 का हवाला देते हुए अवकाश पूर्ववत रखने संबंधी कार्यवाही की सूचना भिजवाते हुए पत्र की प्रति महामंत्री को प्रेषित की है। संगठन मात्र श्रेय लेने में विश्वास नहीं रखता, अधिक महत्व इस बात का है कि अंतत: व्यापक शिक्षा एवं शिक्षक हित में निर्णय लिये जाएं।

10. **महाविद्यालयों के निरीक्षण कार्यक्रम में परिवर्तन हेतु कार्यवाही** - निदेशालय कॉलेज शिक्षा ने आदेश क्रमांक एफ 20 (101) आयो. निकाशि/2013-14/628 दिनांक 20-12-2013 द्वारा महाविद्यालय परिसरों की सफाई एवं रख-रखाव हेतु 15 व 16 जनवरी को कतिपय महाविद्यालयों में निरीक्षण कार्यक्रम तय किये गये थे। इन तिथियों के दौरान रुक्टा (राष्ट्रीय) का प्रांतीय अधिवेशन होने से इन महाविद्यालयों में संबंधित निरीक्षणकर्ता अधिकारियों, प्राचार्यों एवं व्याख्याताओं को कठिनाई आ रही है। इन तिथियों में निरीक्षण कार्यक्रम रखने पर संगठन द्वारा आपत्ति व्यक्त करते हुए कार्यक्रम में संशोधन की मांग की गई। निदेशालय ने संगठन की मांग पर सकारात्मक कदम उठाते हुए आदेश क्रमांक एफ 20 (101)/आयो/निकाशि/2013-14/225(ए) दिनांक 10-1-2014 द्वारा निरीक्षण कार्यक्रम की तिथियों में संशोधन कर दिया।

11. **सेक्टर अधिकारी के रूप में ड्यूटी के संबंध में आग्रह** - संगठन ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त, भारत सरकार, नई दिल्ली, मुख्य निर्वाचन अधिकारी राजस्थान एवं समस्त जिला निर्वाचन अधिकारियों को विस्तृत पत्र भेज कर महाविद्यालय शिक्षकों की ड्यूटी लम्बे समय तक सेक्टर अधिकारी के रूप में नहीं लगाने की मांग की है। संगठन द्वारा अधिकारियों के ध्यान में लाया गया है कि आगामी समय में विश्वविद्यालय परीक्षाएं सम्पन्न होनी है तथा परीक्षार्थियों की बढ़ती हुई संख्या के चलते वीक्षकों की संख्या पहले ही पर्याप्त नहीं रहती है, ऐसे में शिक्षकों की ड्यूटी लगाने से परीक्षाओं का व्यवस्थित एवं निष्पक्ष संचालन करने में बहुत कठिनाई होगी। इसके अतिरिक्त पूर्व में शिक्षकों की यथासंभव ड्यूटी न लगाने संबंधी चुनाव आयोग एवं न्यायालयों के निर्देशों का हवाला भी संगठन ने अधिकारियों को दिया है।

12. **शिक्षकों की विश्वविद्यालयों से जुड़ी समस्याओं के संबंध में कार्यवाही** - संगठन ने राज्यपाल, उच्च शिक्षा मंत्री, अतिरिक्त मुख्य शासन सचिव (शिक्षा), प्रमुख शासन सचिव (उच्च शिक्षा), तथा राज्य के सभी

विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को पत्र लिख कर कुलपति समन्वय समिति में विश्वविद्यालय से जुड़ी शिक्षकों एवं महाविद्यालयों की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने की मांग की है। प्रमुख विषय जो समिति के ध्यान में लाए गए हैं – उनमें परीक्षा पारिश्रमिक में वृद्धि करने, प्रायोगिक परीक्षा में आंतरिक एवं बाह्य परीक्षक दोनों को सम्मानजनक मानदेय देने, स्नातक महाविद्यालयों में पर्याप्त शोध एवं अध्यापन अनुभव वाले शिक्षकों को शोध निदेशक बनने का अवसर देने, एक बार शोध निदेशक के रूप में पंजीकृत शिक्षक को स्थानांतरण के उपरान्त भी मान्यता देने, सभी विश्वविद्यालयों के बॉम/सिंडीकेट में महाविद्यालय शिक्षकों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने तथा म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर से ज. ना. व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर को स्थानांतरित महाविद्यालयों को स्थायी संबद्धता देने जैसे विषय शामिल हैं।

13. **52वें प्रांतीय अधिवेशन में पारित प्रस्तावों पर कार्यवाही का आग्रह** – संगठन ने 52वें अधिवेशन में साधारण सभा द्वारा पारित प्रस्तावों को राज्यपाल, मुख्यमंत्री, उच्चशिक्षा मंत्री, मुख्य सचिव, अतिरिक्त मुख्य सचिव (शिक्षा), प्रमुख शासन सचिव (उच्च शिक्षा) एवं आयुक्त कॉलेज शिक्षा को प्रेषित करते हुए इन प्रस्तावों पर सकारात्मक कार्यवाही का आग्रह किया है।

सांगठनिक एवं वैचारिक कार्यक्रम

1. **कर्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम सम्पन्न** – केन्द्र की योजनानुसार रुक्टा (राष्ट्रीय) की विभिन्न इकाईयों ने कर्तव्य बोध दिवस प्रेरणास्पद वातावरण में सम्पन्न किए।

राजकीय महाविद्यालय अजमेर में मुख्य वक्ता डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली ने कहा कि ज्ञानसम्पदा, संस्कृति, संस्कार, भाषा एवं मनुष्यत्व की रक्षा का कर्तव्य शिक्षक का है। उन्होंने कहा कि समाज में परिवर्तन शासन के माध्यम से नहीं बल्कि शिक्षक द्वारा ही हो सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य एवं संगठन अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा ने की। महामंत्री ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। संचालन डॉ. सुशील कुमार बिस्सु ने किया।

अलवर के राजकीय महाविद्यालय इकाइयों का संयुक्त कर्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम ख्यातनाम शल्य चिकित्सक डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता की अध्यक्षता एवं वरिष्ठ शिक्षाविद् प्रो. पुरुषोत्तम पराजंपे के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। प्रो. पराजंपे ने कहा कि शिक्षकों का शिक्षा के साथ समाज एवं राष्ट्र के प्रति भी महती दायित्व है तथा इस हेतु लेने के साथ साथ समाज को लौटाने का भाव होना आवश्यक है। इससे पूर्व संयुक्त मंत्री डॉ. गंगाश्याम गुर्जर ने कार्यक्रम की भूमिका रखी। विभागीय अध्यक्ष डॉ. शशिकांत गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर में आयोजित कर्तव्य बोध दिवस में मुख्य वक्ता नवलेश्वर मठ के योगी प्रहलादनाथ विज्ञानी ने कहा कि कर्म शक्ति एवं ज्ञानशक्ति के समुच्चय से कर्तव्य का आत्म बोध होता है तथा सहज क्रिया ही कर्तव्य के प्रति आग्रह का भाव पैदा करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. एम. के. जैन ने की। प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य डॉ. सत्यनारायण शर्मा व डूंगर कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. पी. आर. ओझा ने योगीजी का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। इकाई अध्यक्ष डॉ. इन्द्रसिंह राजपुरोहित ने योगीजी का जीवन परिचय करवाया। संचालन डॉ. उज्ज्वल गोस्वामी ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, सीकर में कर्तव्य बोध दिवस कार्यवाहक प्राचार्य प्रो. सोहन लाल ओलखा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रो. बृजमोहन वर्मा ने काव्य गीत प्रस्तुत किया तथा डॉ. ग्यारसीलाल जाट ने मुख्य विषय रखा। इस अवसर पर डॉ. चेतन जोशी, डॉ. सुनीता पाण्डे, प्रो. एस. एन. स्वामी एवं कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. मीर जाफर कुरेशी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनुपमा सक्सेना ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर में कर्तव्य बोध दिवस पर मुख्य वक्ता डॉ. मधुर मोहन रंगा थे। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. बी. एल. सिंगारिया, विभागीय समिति के अध्यक्ष प्रो. पुखराज देपाल सहित अनेक शिक्षक उपस्थित थे।

वाणिज्य महाविद्यालय, कोटा में संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट ने मुख्य वक्तव्य देते हुए शिक्षकों से समस्याओं के समाधान के साथ-साथ समाज के प्रति दायित्वों के निर्वहन का आग्रह किया। कार्यक्रम में कार्यकारिणी सदस्य डॉ. दिलीप गोयल, विभाग के अध्यक्ष डॉ. बी. के. योगी सहित अनेक प्राध्यापक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक गुप्ता ने किया।

राजकीय महाविद्यालय सरदारशहर में कर्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य ईश्वरराम जांगिड़ ने की तथा मुख्य वक्तव्य रुक्टा (राष्ट्रीय) के सहसंगठन मंत्री डॉ. दिग्विजय सिंह ने दिया। विषय प्रर्वतन डॉ. देवीशंकर शर्मा ने किया तथा संचालन इकाई सचिव डॉ. कविता शर्मा ने किया।

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य डॉ. परमेन्द्रजी दशोरा थे, उन्होंने राष्ट्र, समाज एवं शिक्षा के हित में शिक्षकों की भूमिका का रेखांकित करते हुए वर्तमान तंत्र में ही कार्य करते हुए अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने की उपस्थित शिक्षक समुदाय को प्रेरणा दी। विषय प्रर्वतन प्रो. सुरेश अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. दिग्विजय सिंह ने की तथा संचालन इकाई सचिव डॉ. अभिषेक गर्ग ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ में कर्तव्य बोध दिवस पर मुख्य वक्ता संगठन के संयुक्त मंत्री डॉ. गंगाश्याम गुर्जर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या श्रीमती राजेश्वरी सक्सेना ने की। विभाग के सहसचिव डॉ. अरुण रघुवंशी ने प्रस्तावना रखी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. डी. सी. चौबे ने किया जबकि धन्यवाद इकाई सचिव डॉ. एस. डी. मीना ने किया।

राजकीय महाविद्यालय श्रीगंगानगर में डॉ. एन. आर. कस्वां ने कर्तव्य बोध दिवस पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए शिक्षकों को अपने कर्तव्य निर्वहन के प्रति सदैव जागरूक रहने का आह्वान किया। डॉ. नवीन तिवाड़ी, डॉ. अर्चना चुघ, प्रो. चन्द्रपाल जांदू, प्रो. महेश रचियता ने भी इस अवसर पर प्रेरणास्पद विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ. अन्नाराम शर्मा ने किया।

राजकीय कन्या महाविद्यालय श्री गंगानगर में कर्तव्य बोध दिवस प्राचार्य डॉ. एम. एम. अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विभागीय सचिव डॉ. श्यामलाल एवं डॉ. पी. डी. राजोरा ने अपने विचार व्यक्त किये।

राजकीय महाविद्यालय चुरू में कर्तव्य बोध दिवस प्राचार्य डॉ. एम. डी. गोरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो. एल. एन. आर्य, डॉ. कमलसिंह कोठारी, डॉ. सुरेन्द्र सोनी, डॉ. भवानी शंकर शर्मा, डॉ. मधुरिमा भारद्वाज, डॉ. याकूबअली, डॉ. सरोज हरित,डॉ. रविन्द्र कुमार आदि शिक्षक साथियों ने विचार व्यक्त किये।

राजकीय महाविद्यालय करौली में कर्तव्य बोध दिवस प्राचार्य प्रो. बाबूसहाय मीणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ. कल्याण लाल मीणा ने कर्तव्य की महत्ता बताई। डॉ. सोहराब शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर में कर्तव्य बोध दिवस पर डॉ. ओ. पी. शर्मा, डॉ. आर. के. शर्मा, प्रो. मुनेश मीणा सहित कई शिक्षकों ने रक्तदान किया। इस अवसर पर विचार गोष्ठी भी आयोजित की गई। जिसमें मुख्य अतिथि संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा डॉ. राजेश शुक्ला थे। डॉ. विजयसिंह जाट ने कार्यक्रम का संचालन किया।

राजकीय कन्या महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर में कर्तव्य बोध दिवस आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. राजेश शर्मा. प्रो. लालचन्द, डॉ. मगनलाल शर्मा, प्रो. मनीषा शर्मा, डॉ. विजयसिंह ने विचार प्रकट किये।

2. **कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न** - 15 व 16 जनवरी को राजकीय महाविद्यालय, अजमेर में प्रदेश कार्यकारिणी बैठक संगठन अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में महामंत्री प्रतिवेदन, वार्षिक आय-व्यय लेखा एवं प्रस्तावों पर चर्चा कर अंतिम रूप दिया गया। अध्यक्ष जी को धन्यवाद के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

3. **राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न** - अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल की अध्यक्षता में 1 व 2 फरवरी 2014 को कन्याकुमारी में सम्पन्न हुई। महासंघ के महामंत्री जे.पी. सिंघलजी द्वारा प्रस्तुत गत बैठक की कार्यवाही का विवरण एवं कोषाध्यक्ष श्री बजरंग प्रसादजी मजेजी द्वारा प्रस्तुत 31 जनवरी 2014 तक के आय-व्यय विवरण को सदन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। इसके पश्चात् संगठनशः एवं राज्यशः कार्यवृत रखे गए। बडौदा में सम्पन्न राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं अखिल भारतीय महिला कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग की समीक्षा की गई। कार्यकारिणी द्वारा आगामी वर्ष को महिला सहभाग वृद्धिवर्ष के रूप में स्वीकार कर इस संबंध में आवश्यक निर्णय लिए गए, साथ

ही शाश्वत जीवन मूल्य जन जागरण अभियान की रूपरेखा तय की गई। बैठक के अगले दिन विवेकानंद केन्द्र की उपाध्यक्ष दीदी निवेदिता भिड़े का प्रेरणादायी उद्‌बोधन हुआ। समारोप में महासंघ के संरक्षक प्रो. के. नरहरि जी ने अपने उद्‌बोधन में भावना व रचना में सामंजस्य बैठाने की आवश्यकता पर बल दिया। अध्यक्ष जी को आभार एवं सामूहिक कल्याण मंत्र के साथ बैठक समाप्त हुई। राजस्थान की ओर से डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल, प्रो. जगदीश प्रसादजी सिंघल, प्रो. संतोषजी पाण्डे, संगठन अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा तथा सहसंगठन मंत्री डॉ. दिग्विजयसिंह ने भाग लिया।

4. **राष्ट्रीय सम्मेलन एवं राष्ट्रीय परिसंवाद में सहभाग** - अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा 30-31 दिसम्बर को वडोदरा में आयोजित राष्ट्रीय सम्मलेन एवं राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान की प्रासंगिकता विषय पर हुए राष्ट्रीय परिसंवाद में संगठन के 38 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। परिसंवाद में विभिन्न तकनीकी सत्रों में संगठन के प्रतिनिधियों द्वारा अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये गए।

5. **अखिल भारतीय महिला कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग** - 26-27 दिसम्बर को मुम्बई में शैक्षिक महासंघ द्वारा अखिल भारतीय महिला कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग आयोजित किया गया। इस वर्ग में रुक्टा (राष्ट्रीय) की ओर से प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य डॉ. रेखा भट्ट सहित चार प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

6. **वर्ष प्रतिपदा समारोह पूर्वक मनाने का आग्रह** - चैत्र शुक्ल एकम् (इस वर्ष 31 मार्च) से अपना नवीन भारतीय वर्ष विक्रम संवत् २०७१ का शुभ प्रारंभ हो रहा है। केन्द्र की योजनानुसार हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी नवसंवत्सर व्यक्तिशः एवं इकाईशः समारोह पूर्वक मनाया जाना है। महाविद्यालय/विश्वविद्यालय एवं सार्वजनिक स्थानों पर सामूहिक रूप से प्रसाद आदि वितरण कर नव वर्ष की शुभकामनाएं देनी चाहिए। इकाई स्तर पर भारतीय कालगणना के वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक महत्व पर परिचर्चा, संगोष्ठी का आयोजन करना भी अच्छा रहेगा। साथ ही व्यक्तिगत रूप से मित्रों एवं संबंधियों को आमने-सामने मिल कर अथवा, कार्ड, पत्र, एस. एम.एस. आदि के माध्यम से बधाई संदेश एवं शुभकामनाएं प्रेषित करने का आग्रह है। इकाई द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न कर सूचना, प्रेस विज्ञप्ति, फोटो आदि महामंत्री कार्यालय को डाक द्वारा अथवा ई-मेल से भिजवाएं।

विश्वविद्यालय परीक्षाएं प्रारंभ हो गई है, अध्ययन-अध्यापन में वर्ष भर हमारे द्वारा की गई मेहनत निश्चय ही राज्य की उच्च शिक्षा एवं विद्यार्थियों के हित में मार्गदर्शक सिद्ध होगी, ऐसा विश्वास है। होली का पावन पर्व भी सामने है, समरसता, प्रेम एवं धर्म की विजय का प्रतीक यह त्यौहार आप सभी के सुख, समृद्धि, ज्ञान एवं सफलता में अभिवृद्धि करे तथा राष्ट्र समरसता के पथ पर बढ़ता हुआ विश्व का मार्गदर्शन करे, ऐसी शुभकामना है।

भवदीय

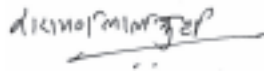

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)
[महामंत्री]

20, चित्रकूट कॉलोनी,
माकड़वाली रोड़, अजमेर-305004

अमृत वचन

शिक्षा मस्तिष्क को अंतिम सत्य खोजने योग्य बनाती है, जो सत्य हमें पार्थिव बन्धनों से मुक्त करता है और हमें वह धन देता है जो सांसारिक वस्तु नहीं है, बल्कि आन्तरिक प्रकाश है, जो शक्ति नहीं है, बल्कि प्रेम है और जिसके कारण मानव उस सत्य को अपना बना लेता है और उसे अपने ढंग से प्रकट करता है।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
52वाँ प्रांतीय अधिवेशन, अजमेर

दिनांक 15 व 16 जनवरी 2014

महामंत्री प्रतिवेदन

संगठन का 51वाँ प्रदेश अधिवेशन 7 व 8 जनवरी 2013 को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में सम्पन्न हुआ। अधिवशन में प्रदेश के सभी जिलों का प्रतिनिधित्व रहा। 51वें अधिवेशन एवं उसके पश्चात् शिक्षक समस्याओं के समाधान हेतु संगठन की प्रमुख गतिविधियों एवं उपलब्धियों के साथ सम्पन्न सांगठनिक एवं वैचारिक कायक्रमों का विवरण आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं।

उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ

- **यू. जी. सी. एरियर की बकाया राशि का भुगतान** - राज्य सरकार द्वारा नवीन यू.जी.सी. वेतनमान हेतु जारी आदेश में यू.जी.सी. एरियर की बकाया 40 प्रतिशत राशि का भुगतान वित्तीय वर्ष 2010-11 में करने का उल्लेख किया गया था। सरकार द्वारा निर्धारित समयावधि में भुगतान नहीं किये जाने पर संगठन ने विभिन्न भेंटवार्ताओं, ज्ञापनों, पत्रों के माध्यम से सरकार पर एरियर राशि जारी करने का दबाव बनाया था। सरकार द्वारा एरियर राशि निर्गत नहीं किये जाने के विरोध में अन्ततः 11 मार्च 2013 को रुक्टा (राष्ट्रीय) के बैनर तले राज्य भर के प्राध्यापकों ने विधानसभा के समक्ष प्रदर्शन किया, जिसकी परिणति में अंततः 40 प्रतिशत एरियर राशि के नकद भुगतान के आदेश जारी कर दिए गए।
- **अकादमी अवकाश हेतु प्राचार्य अधिकृत** - पिछले कुछ वर्षों से अकादमी अवकाश की प्रक्रिया को केन्द्रीकृत कर बहुत जटिल कर दिया गया था, इससे प्राध्यापकों के शैक्षिक उन्नयन एवं राज्य की उच्च शिक्षा पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा था। संगठन प्रारंभ से ही इस बदलाव का विभिन्न लोकतांत्रिक तरीकों से विरोध कर रहा था। हर स्तर पर संगठन द्वारा किये गये लगातार प्रयासों एवं 11 मार्च 2013 को विधानसभा के समक्ष प्रदर्शन के दौरान उच्च शिक्षा मंत्री से हुई वार्ता के फलस्वरूप 10 अप्रेल 2013 को राज्य की परिसीमा के भीतर सेमीनार, संगोष्ठी व कार्यशाला में पत्र वाचन के लिए जाने हेतु अकादमी अवकाश का अधिकार पुनः महाविद्यालय प्राचार्यों को प्रदान कर दिया गया।
- **शीतकालीन तिथियों में अनुचित परिवर्तन संबंधी आदेश वापिस** - निदेशालय कॉलेज शिक्षा द्वारा 13 नवम्बर 2013 को अचानक सत्र् 2013-14 के लिए जारी प्रवेश नीति में शीतकालीन अवकाश की घोषित तिथियों में परिवर्तन कर अवकाश 25 से 31 दिसम्बर 2013 के स्थान पर 1 से 7 दिसम्बर 2013 तक करने के आदेश जारी किये गए। अवकाश करने के पीछे से वैज्ञानिक, भौगोलिक, संवैधानिक, सामाजिक एवं शैक्षिक कारणों पर बिना व्यापक विचार किए निकाले गए उक्त आदेश का संगठन ने तुरन्त तीव्र विरोध किया तथा विस्तृत तथ्यों एवं तर्कों सहित यह विषय राज्यपाल एवं मुख्य सचिव के समक्ष प्रस्तुत किया। संगठन के जोरदार विरोध एवं मजबूत तर्कों के कारण अंततः सरकार को अवकाश परिवर्तन संबंधी आदेश वापस लेकर शीतकालीन अवकाश को पूर्ववत् रखने का आदेश जारी करना पड़ा।
- **विधानसभा चुनाव में प्राध्यापकों की ड्यूटी पद, वेतन व वेतनमान के अनुसार लगाने के लिए की गई कार्यवाही** - संगठन द्वारा मुख्य निर्वाचन आयुक्त, भारत सरकार नई दिल्ली, मुख्य निर्वाचन अधिकारी, राजस्थान व समस्त जिला निर्वाचन अधिकारियों को चुनाव से पर्याप्त समय पूर्व पत्र लिखकर महाविद्यालय प्राध्यापकों की ड्यूटी पद, वेतन व वेतनमान के अनुसार लगाने का आग्रह किया गया। इस संबंध में मुख्य निर्वाचन आयुक्त, नई दिल्ली व राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा पूर्व में जारी निर्देशों को अधिकारियों के ध्यान में लाया गया एवं तद्नुरूप

दिशानिर्देशों के पालन का आग्रह किया गया। अधिकांश स्थानों पर संगठन के इस संवाद के फलस्वरूप प्राध्यापकों को चुनाव कार्य में पद, वेतन एवं वेतनमान के अनुरूप ही ड्यूटी दी गई, तथापि कुछ जिला निर्वाचन अधिकारियों ने लापरवाही से अथवा साशय 15900-39100 एवं 37400-67000 तक की वेतन श्रृंखला में कार्यरत प्राध्यापकों की ड्यूटी भी पीठासीन अधिकारी के रूप में लगा दी। कुछ स्थानों पर अनुशासनात्मक कार्यवाही का भय दिखाकर गरिमा से नीचे ड्यूटी करने के लिए प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा जोर डाला गया। संगठन के संज्ञान में आते ही इसका तीव्र विरोध किया गया तथा मुख्य निर्वाचन आयुक्त को तथ्यों एवं नियमों सहित शिकायत करते हुए इसकी प्रति मुख्य निर्वाचन अधिकारी, राजस्थान एवं संबंधित जिला निर्वाचन अधिकारी को दी गई। कई स्थानों पर संगठन के स्थानीय प्रतिनिधि मंडल ने व्यक्तिगत रूप से जिला निर्वाचन अधिकारी को विरोध ज्ञापन सौंपकर ड्यूटी में गरिमानुसार संशोधन की माँग की। संगठन के संघर्ष का परिणाम सकारात्मक रहा तथा बारां, हनुमानगढ़, राजसमंद, अजमेर, जोधपुर, जयपुर सहित अधिकांश स्थानों पर पीठासीन अधिकारी के रूप में दी गई ड्यूटी निरस्त कर दी गई अथवा पद, वेतन एवं वेतनमान के अनुरूप संशोधित कर दी गई।

- **विषय विशेषज्ञ के रूप में कर्तव्य पर मानने के आदेश** - संगठन द्वारा विभिन्न प्रदेशों के लोक सेवा आयोगों में विषय विशेषज्ञ के रूप आमंत्रित किये जाने पर प्राध्यापकों को कर्तव्य पर माना जाने की निरन्तर मांग की जाती रही है। राज्य सरकार ने आंशिक रूप से इस मांग को पूरा करते हुए मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा मध्य प्रदेश के सीमावर्ती जिलों के अवस्थित महाविद्यालयों के प्राध्यापकों को विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किये जाने पर उन्हें कर्तव्य पर माना जाने के आदेश प्रसारित किये हैं। हालांकि इस संबंध में सरकार से निरन्तर वार्ता एवं पत्राचार जारी है कि सम्पूर्ण प्रदेश के प्राध्यापकों को अन्य राज्यों के लोक सेवा आयोग एवं अन्य अकादमिक निकायों में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किये जाने पर उन्हें कर्तव्य पर माना जाए।
- **यू.जी.सी. वेतनमान के एरियर बिल के संबंध में की गई कार्रवाई** - जुलाई माह में कई प्राध्यापक साथियों द्वारा संगठन के ध्यान में लाया गया कि निदेशालय के स्पष्ट दिशा निर्देशों के अभाव में उनका यू.जी.सी. वेतनमान का एरियर बिल नहीं बन पा रहा है। ऐसे प्राध्यापक जिनका 60 प्रतिशत एरियर एक महाविद्यालय से आहरित किया गया एवं स्थानांतरण या अन्य कारणों से अब वेतन दूसरे महाविद्यालय से आहरित हो रहा है, उनके 40 प्रतिशत एरियर बिल आहरण का दायित्व दोनों महाविद्यालय एक दूसरे पर डाल रहे थे। संगठन के संज्ञान में आते ही निदेशालय में मुख्य लेखाधिकारी एवं निदेशक महोदय को फोन/फैक्स कर उनसे अविलम्ब स्पष्ट दिशा निर्देश जारी करने की मांग की गई। निदेशक महोदय द्वारा इस पर तुरन्त सकारात्मक कार्रवाई करते हुए अगले ही दिन स्पष्टीकरण आदेश कॉलेज शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर डाल दिये गए। संगठन द्वारा की गई त्वरित कार्रवाई से इन प्राध्यापकों को उनके वित्तीय परिलाभ अन्य प्राध्यापकों के साथ प्राप्त हुए।
- **वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान हेतु संवीक्षा** - 31-12-2008 के पश्चात् वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान हेतु बिना किसी आदेश या कारण के रोकी गई संवीक्षा प्रक्रिया को प्रारंभ कराने के लिए संगठन निरन्तर संघर्षरत है। 11 मार्च को विधानसभा प्रदर्शन के समय उच्च शिक्षा मंत्री से हुई वार्ता के परिणाम स्वरूप मई 2013 में प्रस्ताव पत्र मंगवाकर प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। हालांकि इस हेतु एपीआई योजना को पूर्वव्यापी प्रभाव से लागू करने का संगठन ने विरोध किया है। इन आदेशों में शिक्षक हित में आवश्यक संशोधन कर संवीक्षा प्रकिया शीघ्र सम्पन्न करवाने हेतु संगठन का दबाव निरन्तर जारी है।
- **प्राचार्यों एवं उपाचार्यों की डीपीसी** - पिछले काफी समय से लंबित विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक आयोजित करने की संगठन निरन्तर मांग कर रहा था। पदोन्नति के पात्र प्राध्यापकों का यह अधिकार तो था ही साथ ही महाविद्यालयों में उचित शैक्षिक वातावरण के लिए भी डीपीसी होना आवश्यक थी। मार्च-अप्रेल 2013 में अंततः वर्ष 2011-12 एवं 2012-13 की रिक्तियों के लिए उपाचार्यों, स्नातक एवं स्नातकोत्तर प्राचार्यों की

डीपीसी सम्पन्न हुई। स्नातक एवं स्नातकोत्तर प्राचार्यों का पदस्थापन भी कर दिया किन्तु पदोन्नत उपाचार्यों का अभी तक पदस्थापन नहीं होने पर संगठन ने इस देरी का विरोध जताते हुए शीघ्र पदस्थापन की मांग की है।

❖ **पेंशन हेतु संशोधित आदेश जारी** - रुक्टा (राष्ट्रीय) न केवल सेवारत साथियों की मांगों के लिए संघर्ष करता है वरन् सेवानिवृत्त साथियों की समस्याओं के समाधान हेतु भी उतनी ही सक्रियता से प्रयासरत रहता है। 11 मार्च 2013 को विधानसभा पर हुए प्रदर्शन में संगठन की ओर से दिये गए ज्ञापन में एक प्रमुख मांग सेवानिवृत्त शिक्षकों के नवीन यू.जी.सी. वेतनमान के अनुरूप पेंशन पुनः निर्धारण किये जाने की थी। सरकार ने 18 जून 2013 को 2006 से पूर्व सेवानिवृत्त शिक्षकों हेतु नवीन यू.जी.सी. वेतनमान के अनुरूप संशोधित पेंशन आदेश जारी कर दिये। हालांकि इस आदेश में कतिपय खामियाँ है, जिसके लिए संघर्ष जारी है।

❖ **विधानसभा पर विशाल प्रदर्शन** - रुक्टा (राष्ट्रीय) के बैनर तले 11 मार्च 2013 को राज्य भर के 500 से अधिक महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षकों ने अपनी विभिन्न लंबित मांगों को लेकर विधानसभा के समक्ष जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान संगठन के एक प्रतिनिधि मंडल ने तत्कालीन उच्च शिक्षामंत्री से विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा कर संगठन का पक्ष रखा एवं मांगों के संबंध में विस्तृत ज्ञापन प्रस्तुत किया। धरना स्थल पर एवं विधानसभा के भीतर विधायकों ने प्राध्यापकों की मांगों का समर्थन किया तथा उनके अविलंब निस्तारण की मांग की। इस प्रदर्शन के परिणामस्वरूप 40 प्रतिशत एरियर राशि के भुगतान, सीनियर व सलेक्शन स्केल की संवीक्षा प्रारंभ होने, अकादमिक अवकाश का अधिकार प्राचार्य को देने, सेवानिवृत्त शिक्षकों की पेंशन पुनः निर्धारण करने तथा प्राचार्यों एवं उपाचार्यों की डी.पी.सी. करने जैसी मांगों का निस्तारण संभव हुआ। शेष मांगों एवं समस्याओं पर संगठन द्वारा सरकार से निरन्तर वार्ता जारी है।

❖ **भेंट वार्ताएं** - प्राध्यापकों की विभिन्न समस्याओं को गहनता से परख कर उनका यथाशीघ्र न्यायोचित समाधान करवाने हेतु समय-समय पर संगठन द्वारा प्रयास किये गये हैं। इस क्रम में 27 जुलाई 2013 को तत्कालीन मुख्यमंत्री, 9 मार्च 2013 को तत्कालीन नेता प्रतिपक्ष व अन्य विधायकों से, 9 व 11 मार्च 2013 को तत्कालीन उच्च शिक्षा मंत्री से, 28 जनवरी को तत्कालीन कृषि मंत्री से, 28 जनवरी व 18 अप्रेल 2013 को मुख्य सचिव एवं उच्च शिक्षा सचिव से, 23 नवम्बर 2013 को निदेशक से, 18 अप्रेल 2013 को उपशासन सचिव उच्च शिक्षा से, 10 जुलाई को संयुक्त निदेशक सहित अन्य संबंधित अधिकारियों से भेंट वार्ता की गई तथा प्राध्यापकों की समस्याओं के संबंध में पक्ष मजबूत तर्कों सहित प्रस्तुत कर समाधान की प्रक्रिया को त्वरित करने के सघन प्रयास किये गये। विधानसभा के भीतर प्राध्यापकों की मांगों को प्रभावी ढंग से उठाने के लिए संगठन द्वारा नेता प्रतिपक्ष एवं अन्य विधायकों से विधानसभा सत्रों से पूर्व सम्पर्क कर उन्हें विस्तार से मांगों का औचित्य बताया गया, इसकी परिणति में विधानसभा के भीतर विभिन्न अवसरों पर विधायकगणों द्वारा विधानसभा के भीतर तार्किक रूप से मांगों को उठाया गया।

❖ **लिखे गए पत्र** - संगठन की ओर से लम्बित एवं तात्कालिक समस्याओं पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री, उच्च शिक्षा मंत्री, मुख्य सचिव, उच्च शिक्षा सचिव, निदेशक, विश्वविद्यालयों के कुलपति सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को विस्तार से पत्र लिख कर समस्याओं के समाधान का प्रयत्न किया गया है। कई प्रमुख समस्याओं को हल करवाने में संगठन को त्वरित सफलता भी प्राप्त हुई है। इस सत्र् में विशेष रूप से लंबित समस्याओं पर तो सभी संबंधित पक्षों को पत्र लिखे ही हैं, साथ ही तात्कालिक व अन्य समस्याओं में जैसे राजकीय महाविद्यालय झालावाड़ में अनुचित ढंग से किए गए निरीक्षण, रिव्यू डीपीसी में पदोन्नत सेवानिवृत्त प्राध्यापकों के संशोधित वेतन नियतन करने, सेक्टर अधिकारियों को दिए गए मानदेय में विसंगति दूर करने, नैक द्वारा महाविद्यालयों का मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व महाविद्यालयों में समुचित व्यवस्थाएँ करने, महाविद्यालय प्राध्यापकों को सेक्टर अधिकारी ड्यूटी से मुक्त करने, 2 जनवरी 2006 से 30 जून 2006 के मध्य वार्षिक वेतन वृद्धि वाले

प्राध्यापकों को अन्य कर्मचारियों की भांति एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि देने, श्री विनोद बैरवा के साथ मारपीट करने वाले असामाजिक तत्वों पर कानूनी कार्यवाही करने, परमानंद डिग्री कॉलेज गजसिंहपुर के कृषि प्राध्यापकों के समायोजन हेतु न्यायोचित कार्यवाही करने, श्री सी. एल. परसोया को परीक्षा कार्य से डीबार करने के संबंध में पारदर्शिता बरतने, प्रो. अजय कुमार गुप्ता के मामले में विश्वविद्यालय की भेदभावपूर्ण कार्यवाही समाप्त कर प्रकरण का निवारण करने, नेहरू मेमोरियल कॉलेज हनुमानगढ़ के प्राध्यापकों का नवीन यू.जी.सी. वेतनमान में नियतन करने, विश्वविद्यालय प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न करवाने हेतु कर्तव्य अवकाश देने, आर्थिक गणना में प्राध्यापकों की ड्यूटी प्रोटोकॉल के अनुसार लगाने, स्वतंत्र कृषि महाविद्यालय खोलने, निदेशक अकादमी पद पर महाविद्यालय शिक्षा संवर्ग से नियुक्ति करने, उपप्राचार्यों के पदस्थापन करने, यू.जी.सी. के नियमानुसार शिक्षक शिक्षार्थी अनुपात रखने, परीक्षा पारिश्रमिक दरों में वृद्धि करने आदि विषयों पर तथ्यों एवं तर्कों सहित संबंधित पक्षों को विस्तृत पत्र लिखे गए। इन पत्रों के आधार पर उपर्युक्त कई समस्याओं के सकारात्मक समाधान हुए हैं, शेष समस्याओं पर अभी संघर्ष जारी है।

❖ **शिक्षा एवं शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं को लेकर दिल्ली में धरना** – अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के आह्वान पर शिक्षा एवं शिक्षकों की विभिन्न मांगों को लेकर 25 अप्रेल 2013 को सम्पन्न हुए विशाल धरने में रुक्टा (राष्ट्रीय) के 40 से अधिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। धरने को रुक्टा (रा.) अध्यक्ष द्वारा भी संबोधित किया गया। धरने की प्रमुख मांगों में पदनाम परिवर्तन करने, रिक्त पदों पर शिक्षकों की भर्ती करने, शिक्षा के बाजारीकरण पर नियंत्रण करने, स्वायत्त शिक्षा नियामक आयोग बनाने, शिक्षा पर केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा किए गए व्यय का अंश बढ़ाने, जनवरी 2004 से पूर्व की पेंशन योजना बहाल करने सहित अन्य मांगे शामिल थी। इन मांगों का कई सांसदों ने धरना स्थल पर उपस्थित होकर समर्थन किया तथा संसद के भीतर हरसंभव सहयोग करने का आश्वासन दिया। इससे पूर्व रुक्टा (राष्ट्रीय) द्वारा 20 जनवरी 2013 को प्रधानमंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, उच्च शिक्षामंत्री एवं राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को इन मांगों को लेकर विस्तृत ज्ञापन प्रेषित किये गए।

गत सम्मेलन के पश्चात प्राध्यापको की समस्याओं के निराकरण हेतु संगठन विभिन्न गतिविधियों, प्रदर्शनों, भेंटवार्ताओं, ज्ञापनों एवं पत्राचार के माध्यम से निरन्तर सक्रिय रहा है। संगठन की सक्रियता के परिणामस्वरूप पूर्व में लंबित एवं तात्कालिक रूप से उत्पन्न कई समस्याओं का समाधान भी शिक्षक हित में हुआ है। किन्तु रुक्टा (राष्ट्रीय) कतिपय कुछ समस्याओं के समाधान से संतुष्ट होने वाला नहीं है, संगठन निरन्तर संघर्ष कर बढ़ते जाने के मंत्र पर चलने वाला है। अभी कई प्रमुख समस्याओं का समाधान बाकी है। इनका जब तक शिक्षक हित में समाधान नहीं हो जाता, हम रुकने, थकने या बैठने वाले नहीं है। लोकतंत्रात्मक पद्धति से आप सभी शिक्षक साथियों के सहयोग से शेष सभी समस्याओं के निराकरण हेतु प्रयास जारी है।

सांगठनिक एवं वैचारिक गतिविधियाँ

रुक्टा (राष्ट्रीय) की प्रारंभ से ही यह पहचान रही है कि यह मात्र शिक्षक मांगों के लिए काम करने वाला दबाव समूह नहीं है, वरन् व्यापक राष्ट्रीय सोच के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध रखने वाला तथा शिक्षकों के अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों की पालना सुनिश्चित करवाने की दिशा में कार्य करने वाला संगठन भी है। संगठन में गत सम्मेलन के पश्चात् पूर्व नियोजित वार्षिक कैलेण्डर के अनुसार निरन्तर सांगठनिक एवं वैचारिक गतिविधियाँ आयोजित की हैं ताकि संगठन के सक्रिय कार्यकर्ता सदस्यों की टोली शिक्षक, शिक्षा एवं समाज हित में समर्पित भाव से कार्य करते हुए संगठन कार्य का प्रवाह जीवंत रखें।

❖ **विवेकानंद जयंती एवं कर्तव्य बोध दिवस पर कार्यक्रम सम्पन्न** – अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की योजनानुसार प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वामी विवेकानंद जयंती 12 जनवरी से नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के

जन्म दिवस 23 जनवरी के मध्य विभिन्न इकाइयों द्वारा कर्तव्य बोध दिवस सम्पन्न किये गए। यह वर्ष स्वामी विवेकानंद सार्द्धशती वर्ष होने के कारण कई इकाइयों द्वारा विशेष व्याख्यान भी आयोजित किए गए। विभिन्न जिलों में स्वामी विवेकानंद सार्द्धशती समारोह समिति के आग्रह पर रुक्टा (राष्ट्रीय) की स्थानीय इकाइयों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का सक्रियता से आयोजन किया गया।

- **प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठकें** - 7 जनवरी, 17 फरवरी, 14 मई एवं 18 अगस्त 2013 को संगठन की प्रांतीय कार्यकारिणी बैठकें सम्पन्न हुई। इनमें संगठन की विभिन्न गतिविधियों एवं आगामी कार्ययोजना पर गंभीरता से विचार विमर्श कर निर्णय लिए गए।
- **राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठकें** - 23-24 फरवरी 2013 को जलगाँव (महाराष्ट्र), 8-9 जून 2013 को जमशेदपुर तथा 28-29 सितम्बर 2013 को नागपुर (महाराष्ट्र) में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठकें सम्पन्न हुईं। संगठन की ओर से इन बैठकों में अध्यक्ष एवं महामंत्री ने सक्रिय सहभाग किया।
- **वर्ष-प्रतिपदा कार्यक्रम** - केन्द्र के आह्वान पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रुक्टा (राष्ट्रीय) की विभिन्न इकाइयों ने भारतीय नववर्ष विक्रम संवत् २०७० समारोह पूर्वक मनाया। शिक्षक समुदाय द्वारा व्यक्तिशः मित्रों एवं संबंधियों को बधाई संदेश एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गईं। सामूहिक रूप से महाविद्यालय/विश्वविद्यालय परिसर में तथा चौराहों पर सभी को तिलक लगाकर एवं प्रसाद वितरित कर शुभकामनाएं दी गईं।
- **संगोष्ठियाँ** - अप्रैल माह में रुक्टा (राष्ट्रीय) की भीलवाड़ा जिले की इकाइयों द्वारा संयुक्त रूप से भारतीय नववर्ष के सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक महत्व पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इसी प्रकार अजमेर में रुक्टा (राष्ट्रीय) द्वारा नवसंवत्सर एवं महाराणा प्रताप के कर्तत्व पर संगोष्ठीयाँ आयोजित हुई। स्वामी विवेकानंद सार्द्धशती के अवसर पर स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व एवं कर्त्तत्व पर भीलवाड़ा जिले में रुक्टा (राष्ट्रीय) द्वारा संगोष्ठी का आयोजन हुआ। अजमेर में जुलाई माह में वर्तमान शिक्षा-तंत्र में शिक्षक की भूमिका पर शैक्षिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें प्रज्ञा भारती के राष्ट्रीय संयोजक प्रो. सदानंद सप्रे का मार्गदर्शन रहा। अलवर इकाई द्वारा भारतीय शिक्षा में विवेकानंद दर्शन पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 8 जनवरी 2013 को ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक चिंतन की सार्थकता'' विषय पर 51 वें प्रांतीय अधिवेशन के अवसर पर शैक्षिक संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता डॉ. हनुमान प्रसाद व्यास, पूर्व निदेशक ठोस अवस्था भौतिकी प्रयोगशाला नई दिल्ली थे।
- **महापुरुषों की जयंतियों पर कार्यक्रम** - रुक्टा (राष्ट्रीय) द्वारा बाबा साहब अम्बेड़कर जयंती, महाराणा प्रताप, स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों की जयंतियाँ समारोह पूर्वक मनाई गई। संगठन के कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने सार्वजनिक स्थलों पर अवस्थित महापुरुषों की मूर्तियों पर माल्यार्पण किया तथा उनके व्यक्तित्व एवं कर्त्तत्व का स्मरण किया।
- **प्रदेश कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग** - संगठन का दो दिवसीय प्रदेश कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग 15 व 16 मई 2013 को जयपुर में सम्पन्न हुआ। अभ्यास वर्ग के विभिन्न सत्रों में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसाद जी अग्रवाल, महामंत्री प्रो. जे. पी. सिंघलजी, संगठन मंत्री मा. महेन्द्र जी कपूर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक मा. दुर्गादास जी, क्षेत्र प्रचारक प्रमुख मा. नंदलालजी, पुनरुत्थान ट्रस्ट अहमदाबाद की निदेशिका ताई इंदुमतिजी का मार्गदर्शन रहा। वर्ग के विभिन्न सत्रों में संगठन की यात्रा एवं वैचारिक अधिष्ठान, संघ से हमारा संबंध, शिक्षक संगठन में कार्य करते समय आने वाली कठिनाईयाँ एवं

समाधान, कार्यकर्ता कैसा हो, भारतीय शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान विषयों पर प्रबोधन एवं विचार मंथन हुआ। अभ्यास वर्ग में प्रदेश के 67 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

- **प्रदेश अधिवेशन** - संगठन का 51 वाँ प्रांतीय अधिवेशन 7 व 8 जनवरी 2013 को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में राज्य के लगभग सभी जिलों से राजकीय महाविद्यालयों एवं चार विश्वविद्यालयों के व्याख्याताओं, आचार्यों, शारीरिक शिक्षकों, पुस्तकालाध्यक्षों सहित अनेक सेवानिवृत्त शिक्षकों ने भाग लिया। अधिवेशन के उद्घाटन सत्र् के मुख्य अतिथि रा. स्व. संघ के सरकार्यवाह मा. भैय्याजी जोशी थे। देराश्री स्मृति व्याख्यान श्री वी. एस. कोकजे पूर्व राज्यपाल हिमाचल प्रदेश द्वारा दिया गया। अध्यक्षता विधायक श्री कैलाश भंसाली ने की। खुले सत्र में महामंत्री प्रतिवेदन एवं 30 जून 2012 को समाप्त हुए वर्ष का अंकेक्षित आय-व्यय विवरण तथा 30 जून 2012 को समाप्त वर्ष की बैलेंस शीट का सदन ने अनुमोदन किया। इसके पश्चात् सरकार को भेजे जाने वाले प्रस्ताव पारित किये गए। इस अवसर पर जोधपुर संभाग के सेवानिवृत शिक्षकों का सम्मान भी किया गया। समारोप कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक प्रो. वासुदेवजी देवनानी व अध्यक्ष सूरसागर विधायक सूर्यकांताजी व्यास थी। अधिवेशन में नवमनोनीत कार्यकारिणी के नामों की घोषणा अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसादजी अग्रवाल ने की।
- **विभागीय सम्मेलन** - संगठन की वार्षिक कार्य योजनानुसार इस वर्ष सितम्बर माह में नौ विभागों (अजमेर-भीलवाड़ा, धौलपुर-भरतपुर, बीकानेर-नागौर, दौसा-अलवर, श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़, जयपुर, पाली-जालोर-सिरोही, सवाईमाधोपुर-करौली-टोंक, कोटा-बून्दी-बारां-झालावाड़ में विभागीय सम्मलेन सम्पन्न हुए। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष एवं महामंत्री, रुक्टा (राष्ट्रीय) के अध्यक्ष, महामंत्री, संगठनमंत्री, उपाध्यक्ष, सहसंगठन मंत्री, संयुक्त मंत्री, संभाग संगठन मंत्रियों की अलग-अलग विभागीय सम्मेलनों में संगठन के केन्द्रीय प्रतिनिधि के रूप में सहभागिता रही। इन विभागीय सम्मलेनों में केन्द्रीय प्रतिनिधियों द्वारा संगठन की गतिविधियों एवं विभागीय सम्मेलनों के औचित्य बताने सहित वैचारिक विषय रखे गये। सहभागियों द्वारा खुले सत्र में शिक्षक समस्याओं से अवगत कराया गया, उपस्थित केन्द्रीय प्रतिनिधि ने अधिकांश समस्याओं पर संगठन द्वारा की जा रही कार्यवाही से सदन को अवगत कराया गया, शेष रही नवीन समस्याओं की जानकारी प्रतिनिधियों द्वारा केन्द्र तक पहुँचाई गई।
- **गुरु वंदन कार्यक्रम** - केन्द्र के आह्वान पर रुक्टा (राष्ट्रीय) की विभिन्न इकाइयों द्वारा गुरु वंदन कार्यक्रम समारोह पूर्वक मनाये गए। कार्यक्रम में महर्षि वेदव्यास के चित्र पर माल्यार्पण किया गया तथा मुख्य वक्ताओं द्वारा भारतीय गुरु परम्परा पर उद्बोधन दिया गया। कार्यक्रम में इकाई के प्राध्यापकगण व उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया।
- **सदस्यता** - गत वर्ष की भांति इस वर्ष संगठन की सदस्यता अभियानपूर्वक जुलाई माह में ही सम्पन्न की गई। सभी कार्यकर्ताओं एवं प्राध्यापक साथियों ने इस अभियान का समर्थन करते हुए संगठन पर अपना विश्वास व्यक्त किया। इस वर्ष की कुल सदस्यता 3963 रही।
- **वडोदरा में सम्पन्न राष्ट्रीय सम्मेलन एवं राष्ट्रीय परिसंवाद में सहभागिता** - अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा 30-31 दिसम्बर को वडोदरा में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन एवं राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान की प्रासंगिकता विषय पर हुए राष्ट्रीय परिसंवाद में रुक्टा (राष्ट्रीय) के 38 प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। परिसंवाद में सहभागियों ने विभिन्न सत्रों में अपने शोध पत्रों का वाचन किया।

❖ **शैक्षिक महासंघ के अन्य कार्यक्रम** - महासंघ की ओर से 26-27 दिसम्बर 2013 को मुम्बई में आयोजित अखिल भारतीय महिला अभ्यास वर्ग एवं 9-11 अगस्त 2013 को आबूपर्वत में आयोजित अखिल भारतीय विचार बैठक में रुक्टा (राष्ट्रीय) के प्रतिनिधियों ने सक्रिय सहभाग किया।

शिक्षक समस्याओं के समाधान हेतु तथा संगठन के कार्य एवं विचार के विस्तार हेतु हुई गतिविधियाँ योजनानुसार सफलता पूर्वक सम्पन्न हो सकी है तो इसका सम्पूर्ण श्रेय संगठन के सक्रिय कार्यकर्ताओं और आप सब शिक्षक बंधु, बहिनों को ही है। संगठन के प्रति आप सबके प्रेम, सहयोग एवं विश्वास के कारण ही यह संभव हो पाया है। इन गतिविधियों या समस्या-समाधान की प्रक्रिया में आपकी अपेक्षानुसार जो कार्य नहीं हुआ है तो उसके लिए पूर्णत: स्वयं को उत्तरदायी मानकर आपसे करबद्ध क्षमायाचना करता हूँ तथा आपके निरन्तर सहयोग, मार्गदर्शन एवं विश्वास हेतु हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

भवदीय

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)
[महामंत्री]

रुक्टा (राष्ट्रीय) के 52 वें प्रान्तीय अधिवेशन में साधारण सभा द्वारा पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव क्रं. 1.

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के 52वें प्रान्तीय अधिवेशन के अवसर पर संपन्न साधारण सभा पूर्व में स्वीकार किये गए उन सभी प्रस्तावों की पुनर्पुष्टि करती है जिन पर केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, संबंधित विश्वविद्यालय तथा निदेशालय द्वारा अभी भी कार्यवाही अपेक्षित है। साधारण सभा इन पर शीघ्र कार्यवाही का आग्रह करती है।

प्रस्ताव क्रं. 2.

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, विस्तार एवं प्रभावी प्रबन्धन के लिए राज्य उच्च शिक्षा परिषद् का गठन अविलम्ब हो।

आज सम्पूर्ण उच्च शिक्षा तंत्र अनेक अन्तर्द्वन्दों एवं चुनौतियों से जुझ रहा है। सकल नामांकन 19 प्रतिशत से भी कम है, उच्च शिक्षा सभी के लिए सुलभ नहीं है, विभिन्न सामाजिक समूहों में घोर विषमता है। वित्त व्यवस्था एवं प्रबंधन बहुत कमजोर है, शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर निम्न है और मानव निर्माण में शिक्षा की भूमिका तथा युवाओं में नैतिक मूल्यों के विकास की दृष्टि से उच्च शिक्षा आज हाशिये पर जाती दिख रही है। उच्च शिक्षा के वर्तमान तंत्र में नवीन शिक्षा संस्थाओं के संस्थापन एवं नियमन की न तो कोई प्रभावी व्यवस्था है और न ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता आज की आवश्यकता के लिए पर्याप्त है। इस वित्तीय सहायता से भी देश के 33 प्रतिशत राज्य विश्वविद्यालय एवं 51 प्रतिशत महाविद्यालय बिल्कुल अछूते हैं। अधिकांश राज्य विश्वविद्यालय अपनी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति संबद्धता शुल्क एवं राज्य की सहायता से कर रहे हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा की गुणवत्ता एवं समानता नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रही है। विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति को सम्यक दिशा में प्रवृत्त करने के लक्ष्य में वर्तमान उच्च शिक्षा तंत्र सफल नहीं हो रहा है। उच्च शिक्षा ज्ञान आधारित समाज के निर्माण का ही आधार नहीं है वरन् आर्थिक विकास, सांस्कृतिक उत्थान, सामाजिक समरसता, समानता, न्याय एवं नैतिक उन्नयन के लिए एक दीर्घकालीन विनियोग है। उच्च शिक्षा समावेशी एवं सर्वव्यापी बने,

गुणवत्ता युक्त हो, शोध एवं नवाचार व्यक्ति एवं समाज के हित में हो, इस हेतु राज्य के प्रभावी हस्तक्षेप की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदत्त करने, नियमन एवं प्रबंधन करने के लिए व्यापक सुधार की आवश्यकता है। राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान इस ओर एक अच्छी पहल साबित हो सकता है, यदि इसका नियोजन एवं प्रबन्धन उद्देश्यात्मक एवं पारदर्शी हो तथा अभियान की समस्त गतिविधियों में शिक्षाविदों की सहभागिता केन्द्रीय भूमिका में हो। इस परिप्रेक्ष्य में राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की यह साधारण सभा राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान की संकल्पना एवं स्थापना का स्वागत करती है एवं राज्य सरकार से आग्रह करती है कि इस अभियान के अर्न्तगत अविलम्ब राज्य उच्च शिक्षा परिषद् का गठन किया जावे। उच्च शिक्षा परिषद् में शिक्षाविदों को प्रमुख भूमिका में रखते हुए राज्य के समस्त महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों का सर्वांग विकास करने की पहल की जाए। साधारण सभा का सुविचारित मत है कि उपर्युक्त विचारों एवं तथ्यों को ध्यान से रख कर गठित की गई परिषद् राज्य की उच्च शिक्षा का नियोजित एवं समावेशी विकास कर शिक्षा को स्वायत्त बनाते हुए उत्तरदेयता स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

प्रस्ताव क्रं. 3.

राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों के नैक से प्रत्यायन कराने हेतु समुचित संसाधन एवं सुविधाएं विकसित की जाये

उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययन, अध्यापन एवं शोध की गुणवत्ता निश्चित करने एवं तद्नुसार संस्थानों के अन्तर्गत वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (उच्च शैक्षिक संस्थानों का अधिदेशात्मक निर्धारण एवं प्रत्यायन) विनियम 2012 द्वारा नैक से प्रत्यायन अनिवार्य किया गया है। रुक्टा (राष्ट्रीय) की साधारण सभा का सुस्पष्ट मत है कि केन्द्र की यह योजना निश्चय ही उच्च शिक्षा संस्थानों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के व्यापक हित में है, किन्तु राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों की ग्रेड की चिंता तथा पर्याप्त संसाधन एवं सुविधाओं की उपलब्धता किये बिना ही नैक से प्रत्यायन कराने के आदेशों की अनुपालना से राज्य की उच्च शिक्षा को नुकसान ही होने वाला है। नैक द्वारा सेल्फ स्टडी रिपोर्ट के लिए जारी मेनुअल में संस्थान में कार्यरत शिक्षकों की जानकारी हेतु व्याख्याता नाम का कोई कॉलम नहीं है। यू.जी.सी. एवं एम.एच.आर.डी. द्वारा व्याख्याता पदनाम समाप्त कर देने के बाद भी राज्य में महाविद्यालय शिक्षकों का पदनाम परिवर्तन नहीं होने से महाविद्यालयों को मिलने वाली नैक ग्रेड पर विपरीत असर पड़ेगा। यू.जी.सी. के Minimum Standards of Instruction for the grant of the first degree through formal education regulation 2003 में लेक्चर क्लास हेतु अधिकतम 60 एवं प्रयोगशाला हेतु 15 विद्यार्थियों के मानदण्ड बताए गए हैं। नैक को प्रेषित की जाने वाली सेल्फ स्टडी रिपोर्ट में संस्थान में चलने वाले प्रत्येक कोर्स हेतु शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात बताना है। राज्य सरकार द्वारा हर वर्ष अधिक प्रवेश आवेदन पत्रों के आने के कारण अतिरिक्त सेक्शन खोलने के स्थान पर प्रत्येक सेक्शन में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने के आदेश जारी होते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता तो प्रभावित होती ही है, साथ ही नैक द्वारा दी जाने वाली ग्रेड पर इसका बुरा असर पड़ने वाला है। उच्च शिक्षा संस्थानों, विशेषकर महाविद्यालयों में शोध को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य सरकार द्वारा विशेष पहल करने की जरूरत है। नैक द्वारा संस्थान को मिलने वाली ग्रेड इस बात पर भी बहुत निर्भर करती है कि संस्थान में क्या आधारभूत शोध सुविधाएं हैं, कितने शिक्षक पीएच.डी. हैं, शोध पर्यवेक्षक है, कितने शिक्षकों के पास विभिन्न संस्थाओं के मेजर/माइनर शोध प्रोजेक्ट हैं। इस हेतु नैक मैनुअल में घटा हुआ शिक्षण भार, टाइम ऑफ तथा मानव संसाधन उपलब्ध कराने की बात कही गई है, राज्य को इस ओर प्राथमिकता से ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही शिक्षकों को

पीएच.डी. करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु अग्रिम वेतन वृद्धियों सहित पीएच.डी. हेतु कोर्स वर्क करने के लिए विशेष अध्ययन अवकाश के प्रावधान करने की महती आवश्यकता है। अकादमिक अवकाशों की संख्या बढ़ाने तथा इसे वर्ष पर्यन्त स्वीकृत करने से भी शोध प्रोत्साहित होगा। राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों में बरसों से तकनीकी एवं अशैक्षणिक स्टाफ की नियुक्ति नहीं हुई है। कई संस्थानों में प्रयोगशालाएं बिना प्रयोगशाला सहायक, पुस्तकालय बिना पुस्तकालाध्यक्ष तथा खेलकूद गतिविधियाँ बिना शारीरिक शिक्षक के चल रही हैं। आधारभूत संरचना यथा पुस्तकालय, प्रयोगशाला, उपकरण, खेल मैदान, फर्नीचर, ऑडिटोरियम तथा पर्याप्त कक्षा कक्ष नहीं हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की साधारण सभा का यह सुविचारित मत है कि राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों को नैक द्वारा उच्चतम ग्रेड मिले इसके लिए सरकार एवं शिक्षकों के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। इसके लिए पदनाम परिवर्तन करने, शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात यू.जी.सी. के मापदंडानुसार रखने, रिक्त पदों पर भर्ती करने, आधारभूत सुविधाओं का विकास करने, शोध करने हेतु पर्याप्त प्रोत्साहन एवं सुविधाएं देने के संबंध में राज्य सरकार से अविलम्ब सकारात्मक पहल करने की साधारण सभा मांग करती है।

शोक प्रस्ताव

रुक्टा (राष्ट्रीय) के गत अधिवेशन के पश्चात् शिक्षा जगत के हमारे कुछ साथी प्रभुतत्व में लीन हो गए हैं। संगठन के 52 वें अधिवेशन की यह साधारण सभा डॉ. सत्येन्द्र शर्मा अलवर, प्रो. पी. एन. शर्मा उदयपुर, डॉ. राजेश गंगल भीलवाड़ा, प्रो. आर. बी. अग्रवाल उदयपुर, डॉ. वाई. डी. त्यागी उदयपुर, डॉ. राजेन्द्र सक्सेना बाँसवाड़ा, डॉ. शैलबाला मिश्रा भीलवाड़ा के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए इनकी सद्गति हेतु प्रार्थना करती है एवं परमपिता परमेश्वर से कामना करती है इनके परिजनों को इस असह्य दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। इस वर्ष उत्तराखंड में हुई गंभीर प्राकृतिक आपदा में दिवंगत हुए तीर्थ यात्रियों एवं स्थानीय निवासियों की सद्गति हेतु भी 52वें अधिवेशन की साधारण सभा प्रार्थना करती है।

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के 52 वें अधिवेशन की साधारण सभा शिक्षक हितों एवं एकता के परम प्रेरक एवं समाज हित चिंतक प्रो. हरकचन्दजी रारा के निधन पर गहन दु:ख व संवेदना प्रकट करती है तथा अनुभव करती है कि प्रो. रारा के निधन से समाज विशेष कर शिक्षक समुदाय ने ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, आदर्शों के लिए प्रतिबद्ध एवं सर्वहित में जीवन पर्यन्त जीने वाले जीवित आदर्श को खो दिया है। प्रो. रारा एक श्रेष्ठ शिक्षक, जिसकी परिकल्पना की जाती है, थे। उनके इन गुणों की छाप विद्यार्थियों, शिष्यों, अनुयायियों की पीढ़ियों में दृष्टिगोचर होती है। शिक्षा की श्रेष्ठता, शिक्षकों की शिक्षा के लिए प्रतिबद्धता तथा शिक्षक हितों की संरक्षा हेतु राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (अब रुक्टा राष्ट्रीय) की स्थापना के प्रेरणा स्त्रोत प्रो. हरकचन्द राराजी ही थे। आधी सदी से भी अधिक समय तक कार्यरत शिक्षक संघ आज भी प्रो. हरकचन्द राराजी के आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त कर संचालित हो रहा है। शिक्षकों व शिक्षक संगठन का दृढ़ विश्वास है कि अपने आदर्शों के रूप में प्रो. रारा सभी शिक्षकों के हृदय व व्यवहार में जीवित रहेंगे। 52वें अधिवेशन की यह साधारण सभा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगंत आत्मा को शांति प्रदान करे एवं उनके परिजनों तथा शिक्षक समाज को इस असह्य दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

❖ ❖ ❖

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
आय-व्यय लेखा 31 मार्च 2013 को समाप्त नौ माह हेतु
(01 जुलाई 2012 से 31 मार्च, 2013)

इकाइयों को सहायता	73460.00	सदस्यता 2012-2013	293840.00
डाक व्यय	14199.00	इकाइयों से सहायता	18704.00
दूरभाष व मोबाईल	12100.00	इकाइयों का अंश	73460.00
प्रिंटिंग व स्टेशनरी	32299.00	आजीवन सदस्यता	6000.00
यात्रा व्यय	18466.00	बचत खाते पर ब्याज	9665.00
फोटो स्टेट व टाइप	585.00	मियादी जमा खाते पर ब्याज	143051.00
पारिश्रमिक	7000.00		
अधिवेशन हेतु सहायता	49000.00		
अ.भा.रा. शै.शैक्षिक महासंघ	3570.00		
कम्प्यूटर क्रय	42850.00		
विविध व्यय	13300.00		
योग	**266829.00**		
आय का व्यय पर आधिक्य	277891.00		
कुल योग	**544720.00**		**544720=00**

चिट्ठा 31 मार्च 2013

दायित्व पक्ष		सम्पत्ति पक्ष	
आय का व्यय पर गत		रोकड़ बचत बैंक खाता	
गत वर्षों का आधिक्य	19,57,478.20	आई.सी.आई.सी.आई. बैंक	5976.00
इस वर्ष 2012-13 का		यूको बैंक	272029.00
(नौ माह) आधिक्य	2,77,891.00		278005.00
		मियादी जमा खाता	
		आई.सी.आई.सी.आई. बैंक	921427.00
		यूको बैंक	1014125.00
			1935552.00
		महामंत्री से लेना बाकी	21812.20
	2235369.20		**2235369.20**

ह.
डॉ. मधुर मोहन रंगा
अध्यक्ष

ह.
डॉ. नारायण लाल गुप्ता
महामंत्री

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने रुक्टा (रा.) के 31 मार्च 2013 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष की लेखा पुस्तकें, आय एवं व्यय खाता और चिट्ठे का अंकेक्षण किया है और मैं प्रतिवेदित करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमारे अंकेक्षण उद्देश्य हेतु आवश्यक समस्त सूचनाएं एवं स्पष्टीकरण मैंने प्राप्त कर लिये हैं। मेरी राय में और मेरी जानकारी के अनुसार तथा मुझे जो सूचनाएं और स्पष्टीकरण दिये गए हैं, वे संगठन के स्थिति विवरण (चिट्ठा) का 31 मार्च 2013 को सही और प्रमाणित स्थिति प्रकट कर रहा है और इस तिथि को आय का व्यय पर आधिक्य भी प्रकट हो रहा है।

ह.
(डॉ. सोमकान्त भोजक)
अंकेक्षक